यूपी से सालाना सॉफ्टवेयर निर्यात 40 हजार करोड़ रुपये के पार

2020-21 में 28 हजार करोड़ था, हार्डवेयर निर्यात भी 1500 करोड़ से अधिक

अमित मुद्गल

लखनऊ। यूपी का सालाना सॉफ्टवेयर निर्यात 40 हजार करोड़ रुपये के पार हो गया है। 2020-21 में सॉफ्टवेयर निर्यात सालाना 28 हजार करोड़ ही था। लखनऊ से निर्यात भी 400 करोड़ से बढ़कर 550 करोड़ रुपये हो गया है। अगले एक साल में इसे 700 करोड़ रुपये तक पहुंचाने की तैयारी है। वहीं, प्रदेश का हार्डवेयर निर्यात भी 1500 करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है।

विज्ञान के अलावा खासतौर पर चिकित्सा, विधि, कृषि, परामर्श जैसे क्षेत्रों में भी सॉफ्टवेयर तकनीक ने उछाल दर्ज की है।

550 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ लखनऊ से, पहले था 400 करोड़

सॉफ्टवेयर स्टार्टअप शुरू करने का सबसे ज्यादा लाभ युवाओं को मिल रहा है। आईटी मंत्रालय की नेशनल जेनरेशन इंक्यूबेशन स्कीम (एनजीआईएस) के तहत हर क्षेत्र में स्टार्टअप तैयार किए जा रहे हैं। जो खासतौर से सॉफ्टवेयर निर्यात कर रहे हैं। स्कीम के तहत देश में 12 स्थानों पर केंद्र बनाए गए हैं। यूपी में लखनऊ और प्रयागराज में दो केंद्र हैं, जहां स्टार्टअप तैयार किए जा रहे हैं। इस योजना में फंड के अलावा छह माह तक 30 हजार रुपये प्रतिमाह प्रोत्साहन राशि भी दी जा रही है।

प्रदेश में एसटीपीआई के चार और पार्क प्रस्तावित : सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) के अपर निदेशक डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी के मुताबिक यूपी में एनजीआईएस के तहत 42 स्टार्टअप चुने गए हैं। इनमें से अभी आठ को 25-25 लाख रुपये दिए गए हैं। शेष को भी धन देने की तैयारी है। वहीं, लीप अहेड प्रोग्राम में एक करोड़ रुपये तक देने की तैयारी है। वर्तमान में प्रदेश में एसटीपीआई के पांच पार्क लखनऊ, नोएडा, कानपुर, प्रयागराज और मेरठ में हैं। जबकि चार अन्य प्रस्तावित हैं। इनमें से आगरा का सेंटर बनकर तैयार हो चुका है।

वहीं गोरखपुर का सेंटर जून 2024 तक तैयार हो जाएगा। बरेली में निर्माण शुरू हो चुका है। वाराणसी में स्थान का चयन हो चुका है और जल्द ही काम शुरू होगा। इन चारों के बनने के बाद यूपी का सॉफ्टवेयर निर्यात और ऊंची उड़ान भरेगा।

चिकित्सा जगत में सॉफ्टवेयर तकनीक पर प्रयोग

प्रदेश में नई आईटी नीति लागू होने के बाद चिकित्सा जगत में सॉफ्टवेयर के प्रयोग के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। सेंटर ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप का अहम प्रयोग एसजीपीजीआई लखनऊ में शुरू हुआ। वहां के प्रबंधन और एसटीपीआई के इस साझा कार्यक्रम में क्लीनिकल ट्रायल पर काम हो रहा है। एसटीपीआई ने हाल ही में 28 ऐसे स्टार्टअप तैयार कराए हैं, जो सिर्फ चिकित्सा जगत में सॉफ्टवेयर तकनीक पर प्रयोग कर रहे हैं। इनमें से छह अपने उत्पादों का पेटेंट भी करा चुके हैं।

वर्तमान में एसटीपीआई पार्कों से 342 एक्सपोर्ट यूनिट और 101 कंपनियां इंक्युबेशन सेंटर से जुड़ी हैं। जल्द ही प्रदेश में एसटीपीआई के चार और सेंटर शुरू होंगे तो इसमें और बढ़ोतरी होगी। युवाओं के लिए रोजगार के नए मार्ग खुलेंगे। एक ही पार्क से लगभग छह हजार युवाओं को तत्काल लाभ मिलता है। **-डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी,** अपर निदेशक, एसटीपीआई